



हिन्दी काव्य एवं साहित्य जगत के जाने-माने हस्ताक्षर श्री आश करण अटल जी का यह रोचक स्तम्भ हमने पिछले अंक से शुरू किया है, जिसके अंतर्गत उन्होंने भारतीय सिनेमा जगत पर व्यंग्य-विनोद भरी चुटकियों की शानदार बानगी पेश की है। आपके पत्रों से पता चला है कि आपको हमारी यह अनूठी पहल काफी पसंद आयी है। इसीलिए इसे जारी रखते हुए इस बार हम इसकी अगली कड़ी पेश कर रहे हैं। देश-विदेश के 2000 से अधिक काव्य-पाठी दौरे कर चुके श्री अटल जी के व्यक्तित्व का एक और शानदार पहलू इस स्तम्भ के जरिये आप देख पायेंगे।

प्रधान सम्पादक

डिक्शनरी के हिसाब से नायिका के कई मतलब होते हैं, जैसे वह स्त्री, जो यौवन तथा रूप-गुण सम्पन्न हो। वह स्त्री जो नाटक, उपन्यास आदि की प्रधान पात्री हो। वह स्त्री, जो नायक की पत्नी या प्रेमिका हो। वह स्त्री, जो राह दिखाने वाली या कहीं पहुँचाने वाली हो। डिक्शनरी में बताई गई नायिका से फिल्मों की नायिका की तुलना करें, तो फिल्मों की नायिका इक्कीस ही निकलेगी, उन्नीस नहीं। आज हम फिल्मों की कुछ प्रमुख नायिकाओं की प्रमुख विशेषताओं के बारे में निर्मल मन से निर्मल चर्चा करेंगे। पाठकों की सुविधा के लिए उनको निम्न भागों में बाँटेंगे -

जनरल नायिका : नायिकाओं में एक नायिका होती है, जनरल नायिका। जनरल नायिका, जैसे जनरल स्टोर। जिस तरह जनरल स्टोर में सब सामान मिलता है, वैसे ही जनरल नायिका में सब गुण मिलते हैं। चंचल वह, गम्भीर वह, त्याग और मर्यादा की साक्षात् मूर्ति वह, यौवन उसमें, रूप और गुण उसमें। जनरल नायिका की एक विशेषता यह होती है कि उसमें एक विशेषता नहीं होती, बल्कि सभी विशेषताएँ होती हैं। डायरेक्टर अपनी सुविधा से, जब चाहे उसके त्याग और मर्यादा के गुण को भुना सकता है और जब चाहे उसके यौवन और नृत्य को कैश कर सकता है। आजकल जनरल नायिका कुछ ज्यादा ही जनरल हो गई है। उधर हर मोहल्ले में जनरल स्टोर खुल गया है। इधर हर फिल्म में जनरल नायिका पाई जाने लगी है।

पारिवारिक नायिका: पारिवारिक नायिका पारिवारिक फिल्मों में पाई जाती है। यह घरेलू किस्म की सती-सावित्री औरत होती है। जब पतिव्रता होने पर उतारू होती है, तो इतनी पतिव्रता हो जाती है कि अपने पति को भी हाथ नहीं लगाने देती। इसमें अत्याचार सहने की गजब की शक्ति होती है। हिन्दुस्तानी सास ऐसी बहू को पर्दे पर देख कर ठंडी आँहें भरती है और अपनी बहू से उम्मीद करती है कि वह इस देवी से कुछ सीखे।

पारिवारिक नायिका लोरी और आरती गाने में विशेषज्ञ होती है। उसने भक्ति में डूबी आरतियाँ गाकर कई भगवानों को प्रसन्न किया। ममता में डूबी लोरियाँ गाकर कई बच्चों को मीठी नींद सुलायी। अब वही बच्चे जागकर बड़े हुए, तो डिस्को और पॉप म्यूज़िक के रंग में रंग गये। वे आरती और लोरी के नाम से दूर भागने लगे।

पारिवारिक नायिका का भूतकाल भले ही गौरवशाली



★ आश करण अटल

रहा हो, लेकिन उसका भविष्य अंधकारमय लगता है, क्योंकि युवा वर्ग को अब डिस्को और पॉप म्यूज़िक चाहिये। पारिवारिक नायिका को फिल्मों में बने रहना है, तो उसे अपने आप को बदलना होगा। उसे 'डिस्को-आरती' और 'पॉप-लोरी' गानी होगी।

कॉलेज गोइंग नायिका : कॉलेज गोइंग नायिका में डिक्शनरी में बताई गई नायिका की तरह यौवन और रूप भरपूर मात्रा में पाया जाता है। जहाँ तक गुण सम्पन्न होने का सवाल है, तो अभी उसमें समय लगेगा और हाल-फिलहाल उसको इसकी ज़रूरत भी नहीं है। कॉलेज गोइंग नायिका कॉलेज की यूनीफार्म पहनने में विश्वास नहीं करती। वह वहाँ पढ़ने या पढ़ाने नहीं, बल्कि नायक की नींद और बाकी विद्यार्थियों के होश उड़ाने जाती है। वह वहाँ डिग्री नहीं, नायक का दिल लेने जाती है। कॉलेज गोइंग नायिका स्क्रीन पर नई नहीं है। फिल्म 'मेरे महबूब' में नायिका साधना और नायक राजेन्द्र कुमार टकराये, तो एक अमर गीत का जन्म हुआ- 'मेरे महबूब तुझे मेरी मोहब्बत की कसम...' और कॉलेज में टकराने की स्वस्थ परम्परा को जन्म दिया, जो कई साल तक चली। हाय ! कहाँ गये वो लोग और और कहाँ गया वह टकराना ?

गाँव की नायिका : गाँव की नायिका अक्सर झील या पहाड़ी के उस पार रहा करती है, जो कहानी की डिमांड के हिसाब से कभी-कभी इस पार आ जाती है। वह इस पार नहीं आ सके, तो नायक उस पार पहुँच जाता है। उसका जूड़ा बड़ा और घाघरी छोटी होती है। निर्देशक के अनुसार वह भोली और नादान होती है, जबकि लगती कहीं से भी नहीं है।

इसका रूप-यौवन डिक्शनरी वाली नायिका के जोड़ का होता है। यह जब भी दिखती है, पनघट या खेतों में दिखती है। गाँव की नायिका का घर में क्या काम ? गाँव की

नायिका उसी गाँव में होती है, जिस गाँव में एक दुष्ट लाला और एक ज़ालिम ठाकुर होता है। नायिका का गाँव बड़ा प्यारा होता है, जो किसी एंगल से कश्मीर लगता है, तो किसी एंगल से दार्जिलिंग लगता है। गाँव की नायिका ज्यादातर अपना दिल किसी परदेसी को देती है। इसी उम्मीद में कई शहरी युवकों ने गाँव की तरफ प्रस्थान किया। पिकनिक के प्रोग्राम बनाए, लेकिन सबको निराश लौटना पड़ा, क्योंकि फिल्मी गाँव की नायिका, फिल्मी गाँवों में ही पाई जाती है, असली गाँवों में नहीं।

नहाने वाली नायिका : नहाने वाली नायिका का फिल्मों को चलाने में बड़ा योगदान रहा है। जिस-जिस फिल्म में नायिका नहाई, उस-उस फिल्म ने जुबली मनाई। इसीलिए यह कहा जाने लगा कि नहाना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। नहाने वाली नायिका का अपना इतिहास रहा है। पहले वह भीगने वाली नायिका हुआ करती थी- 'एक लड़की भीगी-भागी सी।' जितना मज़ा नायिका को भीगने में आता, लगभग उससे दुगुना मज़ा दर्शकों को देखने में आता। नतीजा यह हुआ कि नायिकाओं में भीगने की होड़ लग गई। एक साड़ी में भीग रही है, तो दूसरी सलवार-कमीज में भीग रही है। उस होड़ को खत्म करने के लिए ही नहाने वाली नायिका ने बिकनी में नहाने वाली नायिका का अवतार लिया, जिसका भारतीय रजत पट पर काफ़ी समय तक एक छत्र राज रहा।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। एक दिन नहाने वाली नायिका की नेक्स्ट जनरेशन यानी तैरने वाली नायिका ने रजत पट पर कदम रखा, तो नहाने वाली नायिका का अस्तित्व खतरे में पड़ गया। वह स्विमिंग सूट पहन कर स्विमिंग पूल में क्या उतरी, सीधे दर्शक के दिल में उतर गई।

नर्तकी नायिका : नर्तकी नायिका का उद्भव कोठे पर हुआ। उसने कई साल तक स्क्रीन पर राज किया। कभी 'देवदास' की चन्द्रमुखी बन कर, कभी 'पाकीज़ा' की पाकीज़ा बनकर, तो कभी 'मुकद्दर का सिकंदर' की ज़ोहरा बनकर। रूप-यौवन में वह डिक्शनरी वाली नायिका पर भी भारी पड़ती थी, लेकिन डिक्शनरी वाली नायिका की तरह राह दिखाने वाली या कहीं पहुँचाने वाली नायिका नहीं बन सकी, क्योंकि वह कोठे पर रहने वाली होती थी। नर्तकी नायिका दर्शकों के दिलों में तो घर बनाने में सफल रही, लेकिन अपना घर कभी नहीं बसा सकी।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, परिवर्तन प्रकृति का नियम है। नायिका में परिवर्तन आया, फिर नृत्य में परिवर्तन आया। पहले नायिका कोठे पर नाचती थी, आजकल कॉलेज में नाचती है। पहले अकेली नाचती थी, अब भीड़ के साथ नाचती है। पहले नर्तकी नायिका होती थी, आजकल नायिका सिर्फ नर्तकी बनकर रह गई है।

❀ **बिंदु-छप्पन छुरी नायिका** : फिल्मों में एक बिंदु-छप्पन छुरी किस्म की नायिका होती है। वह जेब भी काटती है। लोगों के साथ फादेबाजी भी करती है, लेकिन इज्जत के मामले में एकदम कोरी निकोर, सती-सावित्री। रूप-यौवन में डिक्शनरी वाली नायिका के माफिक। गुण सम्पन्न होने के मामले में भी वह डिक्शनरी वाली नायिका जैसी ही होती है। आप पूछेंगे, वह जेब क्यों काटती है, तो अपने लिए थोड़े ही काटती है? फादेबाजी करती है, तो अपने स्वार्थ के लिए थोड़े ही करती है? अपनी बीमार माँ के इलाज के लिए करती है। बेचारी बिंदु-छप्पन छुरी नायिका को एक बीमार माँ विरासत में मिलती है। यूँ समझ लीजिये कि यह बिंदु-छप्पन छुरी किस्म की नायिका आवारा और छलिया किस्म के नायक का स्त्री संस्करण है। कभी-कभी तो यह नायिका लड़के का भेष बदल कर रहती है और फुटपाथ पर सोती है। नायक को महीनों तक पता ही नहीं चलता कि वह लड़की है। वह तो एक दिन अचानक बिजली कड़कने के डर से नायक से चिपकती है, तो पता चलता है कि वह

लड़का नहीं है, बल्कि रूप-यौवन और गुण सम्पन्न नायिका है।

❀ **प्रेम त्रिकोण फिल्म की नायिका** : प्रेम त्रिकोण फिल्म की नायिका, वह नायिका होती है, जिससे दो-दो नायक प्रेम करते हैं। ऐसी नायिका बड़ी भाग्यशाली होती है। एक प्रेमी नालायक निकल जाये, तो दूसरा तैयार बैठता है, अपनाने के लिए। जिस प्रेमी को वह मिलती है, वह प्रेमी जिन्दगी भर उसके अहसान तले दबा हुआ व्यवहार करता है। पता नहीं कब ये कहने-सुनने को मिल जाये कि मेरे लिए दूल्हों की कोई कमी थोड़े ही थी। वह तुम्हारा दोस्त गोपाल, तुमसे ज्यादा पढ़ा-लिखा और पैसे वाला था। मुझ पर जान छिड़कता था। शुक्र मानो कि मैंने तुमसे शादी की। वरना आज मुझे भाभी कह के पुकार रहे होते। 'अंदाज' 'चौदहवीं का चांद' और 'संगम' ऐसी ही फिल्में थीं। मैंने ये फिल्में बचपन में देखी थीं। नरगिस जी, वहीदा रहमान जी और वैजयंती माला जी से ही दो हीरो प्रेम करते थे। इसके बावजूद उन्होंने सैड साँग गाये, तो मुझे बड़ी हैरानी हुई थी कि वे क्यों रो रही हैं ? उनके तो दोनों हाथों में लड्डू हैं।

❀ **कला फिल्म की नायिका** : कला फिल्म की नायिका एक अभिशापित नायिका होती है। न तो वह गाना गा सकती है, न वह नाच सकती है, न ठीक से सिंगार कर सकती है। डिक्शनरी में बताई गई नायिका जैसा रूप और यौवन तो उसमें होता है, लेकिन कला फिल्म का निर्देशक उसे ढंग के कपड़े तक नहीं पहनने देता। उसका रूप और

यौवन जड़ में चला जाता है। न नायक के काम आता है, न दर्शक के काम आता है। रही बात डिक्शनरी में बताई गई नायिका की तरह गुण सम्पन्न होने की, तो गुण तो उसमें होते हैं, लेकिन आज के जमाने में गुण देखता कौन है ? और वह भी नायिका में ? नायिका में लोग अदा देखने जाते हैं। जलवा देखने जाते हैं। तुमका देखने जाते हैं। गुण की ऐसी-तैसी!

❀ **घमंडी नायिका** : फिल्मों में घमंडी नायिका की शुरुआत 'आन' फिल्म से मानी जाती है, जिसमें घमंडी राजकुमारी नादिरा का घमंड दिलीप कुमार तोड़ता है। वैसे इस तरह की नायिका कोई राजकुमारी या रईसजादी ही होती है। एक तो खुद किसी आफत से कम नहीं होती, ऊपर से उसके रईस बाप का डर अलग से। कौन मधुमक्खियों के छत्ते में हाथ डाले ? उसके अपने लक्षणों से तो लगता है कि वह घमंडी नायिका कुँवारी ही मरेगी, लेकिन नहीं, आखिर नायक किस मर्ज की दवा है ? फिल्म की तीसरी रील में वह उस खूँखार शेरनी को गऊ बना देता है। नायिका का बाप हैरान। दर्शक बाग-बाग। जैसे किसी दस्यु-सुन्दरी के आत्म समर्पण करने पर पुलिस बाग-बाग होती है। डिक्शनरी में बताया गया घमंडी नायिका का रूप हंटर को छोड़ कर मेहंदी रचा लेता है और यौवन घोड़े से उतर कर सेज पर जा बैठता है। ऑल क्रेडिट गोजू टू नायक। बट आई नोट वह सब उम्र का तकाजा था।

क्रमशः... अगले अंक में जारी

प्रथम दृश्य: कक्षा, अवसर 14 सितम्बर हिन्दी दिवस का है। अध्यापिका का प्रवेश होता है। छात्राएँ: गुड मॉर्निंग मिस।

अध्यापिका: गुड मॉर्निंग, नहीं-नहीं शुभ प्रभात, कल क्या समझाया था ? सभी भूल गईं, आज हिन्दी दिवस है और आज इन्स्पेक्टर साँरी, नहीं खेद है, विद्यालय निरीक्षक आ रहे हैं और हम सभी को आज हमारी राष्ट्र भाषा में ही बोलना है।

छात्राएँ: शुभ प्रभात कुँवारी। अध्यापिका: नहीं-नहीं, शुभ प्रभात कुँवारी नहीं, शुभ प्रभात दीदी ठीक रहेगा। छात्राएँ: शुभ प्रभात दीदी !

अध्यापिका: शीला तुम पहले संगणक के कार्य का बताओ सूषा या आकृति (फॉन्ट) का वजन कम हुआ (डाउनलोड) या नहीं। शीला: दीदी, चूहे की पूँछ कट गई है। न कोई खिड़की खुल अथवा बन्द हो रही है और ना ही कुछ चौड़ रहा है। (माउस की वायर कट गई है। कोई विंडो न खुल रही है न बन्द हो रही है, न कुछ रन हो रहा है।) अध्यापिका: वीना तुम कुछ करो। वीना: मैं चाबी पटल से खिड़की खोलने या कुछ भगाने का प्रयास करती हूँ। नहीं दीदी ये संगणक तो लटक गया है। (हैंग हो गया है) दूसरे संगणक पर शल्यक्रिया (ऑपरेट) कर के देखती हूँ। दीदी, आज ही सब कुछ गड़बड़ होना था। लगता है अर्न्तजाल (इन्टरनेट) काम नहीं कर रहा है, कोई भी जालपृष्ठ (वेब पेज) नहीं खुल रहा है, कैसे सूषा का वजन कम करूँ ? अध्यापिका: अच्छा छोड़ो कल जो शब्द बताये थे, उनका हिन्दी अनुवाद अगर पता लगा हो तो बताओ। डबल बेड। शीला: दो गुणा गन्दा। अध्यापिका: नहीं बैड नहीं बेड। शीला: दोहरा बिस्तर। अध्यापिका: केबल टी वी। नेहा: रस्सा दूरदर्शन।



अध्यापिका: मोबाइल फोन। सुदर्शना: चल दूरभाष।

अध्यापिका: ईयर फोन। वीना: कर्ण दूरभाष।

अध्यापिका: नेकटाई। नगमा: कंठ बंध या गल बंध।

द्वितीय दृश्य: प्रधानाध्यापक का निरीक्षक के साथ प्रवेश। सभी छात्राएँ व अध्यापिका : शुभ प्रभात सर, शुभ प्रभात मैडम। प्रधानाध्यापक: क्या सर-सर मैडम-मैडम लगा रखा है? सभी छात्राएँ व अध्यापिका : खेद है मस्तक, शुभ प्रभात मस्तक, शुभ प्रभात पागल हूँ। (मैड एम)। निरीक्षक अध्यापिका से: आपका नाम क्या है ? अध्यापिका: जी वॉयलेट। प्रधानाध्यापक गुस्से से अध्यापिका की तरफ देखते हैं। अध्यापिका घबरा कर: जी, नहीं-नहीं बैंगनी। निरीक्षक: मैं आपकी साड़ी का रंग नहीं आपका नाम पूछ रहा हूँ। अध्यापिका: (डरते-डरते) जी मेरा नाम ही वॉयलेट यानी हिन्दी में बैंगनी है। (सभी लोग हँसते हैं) निरीक्षक: (एक छात्रा से) आपका नाम ? छात्रा: शरमाते हुए, जी गुलाबी। निरीक्षक: मैं तुम्हारे गालों का नहीं तुम्हारा रंग पूछ रही हूँ।

अध्यापिका: जी इसका नाम पंकी है। निरीक्षक: अच्छा टूथपेस्ट व टूथब्रश की हिन्दी बताओ। छात्रा: जी दन्तलेई व दन्ततूलिका। निरीक्षक: एस.एम.एस.। छात्रा: ल स से (लघु सन्देश सेवा)। निरीक्षक: (दूसरी छात्रा से) आप कहाँ रहती हैं ? छात्रा: जी गिरिजा घर द्वार में। निरीक्षक: आपके पिता पादरी हैं क्या ? अध्यापिका: नहीं महोदय, यह चर्चगेट में रहती है। निरीक्षक: आप तो लगता है घर पर हिन्दी भाषा का प्रयोग करते होंगे। अध्यापिका: जी, पर मेहमानों के आने पर आंग्लभाषा का। निरीक्षक: क्यों ? अध्यापिका: जी धाक जमाने के लिए, लड़कियों की शादी भी तो करनी है। अध्यापिका के यह बोलते ही सुई पटक सन्नाटा(पिन ड्रॉप साईलेंस) छा जाता है। वातावरण बदलने के लिए निरीक्षक हँसती है। निरीक्षक: अच्छा अब हिन्दी से आंग्लभाषा में अनुवाद करें। करत-करत अभ्यास कर जड़मति होत सुजान, रसरी आवत-जावत है, सिल पर करत निशान। छात्रा: डूईंग-डूईंग प्रैक्टिस रूट ब्रेन बिकम्स लर्न्ड, रोप कमिंग गोईंग आन स्टोन मेक्स इट्स साइन ऑन इट। निरीक्षक: वेरी गुड, साँरी नहीं-नहीं खेद है, बहुत अच्छे। अब बताइये, पंखा चल रहा है और तुम इधर-उधर घूम रहे हो। छात्रा: जी, फैन इज वॉकिंग एन्ड यू आर रोटेटिंग हियर एन्ड दियर। निरीक्षक: आप सभी से अन्तर्क्रिया कर बहुत आनन्द का अनुभव हुआ, बहुत अच्छी बिगनिंग, नहीं-नहीं, शुरुआत है, प्रयास जारी रखें। निरीक्षक, प्रधानाध्यापक, अध्यापिका एवं छात्राएँ एक स्वर में : हम होंगे कामयाब, करेंगे अभ्यास, है हिन्दी में ही आस, ना इंग्लिश हो कभी पास, एक दिन, ऐसा है विश्वास, जब तक है साँस में साँस, करेंगे हिन्दी में प्रयास सभी दिन, हम होंगे कामयाब एक दिन...!

❀ **डॉ. ताराचंद शर्मा**, वरिष्ठ मंडल चिकित्सा अधिकारी (नेत्र विभाग), जगजीवन राम अस्पताल, पश्चिम रेलवे, मुंबई सेंट्रल

मेरा भारत महान - ओह याह !



आज की पीढ़ी मोबाइल फोन और इंटरनेट के माध्यम से डिस्को और पब में पल बढ़ रही है। इनके चलते मार्किट में इतने ड्रेस डिज़ाइनर हैं किन्तु कपड़े हैं कि छोटे से छोटे होते जा रहे हैं। डिज़ाइनर लो ड्रेस डिज़ाइन नहीं कर रहे बल्कि नई डिज़ाइन में शरीर को दिखाने का इंतज़ाम कर रहे हैं। जितने ज्यादा ड्रेस डिज़ाइनर, उतने छोटे कपड़े।

सुनने में आया है कि एक पेरेन्ट टीचर्स एसोसिएशन की बैठक में पेरेन्ट्स और टीचर्स की तू-तू-मैं-मैं इस कदर बढ़ी कि टीचर्स ने स्कूल की छत पर चढ़ पेरेन्ट्स पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिये। माँ-बाप जैसे-तैसे जान बचा कर भागे। कई पेरेन्टों के सिर फट गये। टीचर्स ने कहा पहले हमने तुम्हारी जेबें फाड़िं, अब खोपड़ी फाड़ेंगे। सरदार मैंने आपका नमक खाया है। ले अब गोली खा। मैं कहूँगा टीचर्स ने बहुत अच्छा किया। ये पेरेन्ट हैं ही इस लायक। बच्चों को अंग्रेज़ी स्कूल में भी पढ़ाना चाहते, मगर इंटरव्यू और फीस देने में आनाकानी। प्यार करते हो शैरी से और दूध लोते हो डेरी से।

जिस तरह झोंपड़ी वालों का एक ख्याब होता है कि एक अदद पक्का मकान बन जाये। उसी तरह हम लोग जो सरकारी स्कूल में टाट पट्टी पर टैटों के नीचे बैठकर पढ़े और पले-बढ़े हैं, हमारे मन में एक कसक रह जाती है कि अपना पेट काटकर भी बच्चों को अंग्रेज़ी स्कूल में पढ़ाना है। व्यवस्था बदलने से आसान काम है व्यवस्था से बदला लिया जाये। कोई गुड़ से मरता हो तो उसे जहर क्यों दिया जाये ? आप भी कुछ लेते क्यों नहीं ?

आज की तारीख में अंग्रेज़ी स्कूलों के लिए ऐसे भगदड़ मची है, जैसे पिछले दिनों शहर के एक अस्पताल में देखने को मिली थी। हुआ यूं कि शाम को जब मरीज़ लोग आं...आं...हाए मरा... कराह रहे थे और उनसे मिलने वाले उन्हें मौसमी, सेब और सांत्वना दे रहे थे, तभी अचानक किसी ने खबर उड़ा दी की अस्पताल में बम है। बस फिर क्या था ? आनन-फ़ानन से सब दौड़ पड़े। मरीज़ पलस्तर लगाये ही भाग छूटे। कई ग्लूकोज की शीशी समेत दौड़े जा रहे थे। कई मरीज़ लोग ये जा वो जा। घर जाकर ही दम लिया। जान सलामत रहे अस्पतालों की क्या कमी है ? जान है तो जहान है। बस इसी तरह हम लोग अंग्रेज़ी स्कूलों पर टूट पड़े हैं। अंग्रेज़ों की दो सौ साल की गुलामी और अत्याचारों का बदला ले रहे हैं। तुम अंग्रेज़, अंग्रेज़ी और गोरी चमड़ी के बल पर हमारे माई-बाप बने रहे। अब हम ब्राउन माई-बाप अपनी पीढ़ियों को अंग्रेज़ी पढ़ाते हैं ताकि दे कैन टाक इंग्लिश, वाक इंग्लिश एंड लाफ इंग्लिश।

अभी हमने किसी किताब में पढ़ा था कि सिकन्दर अपनी सेना लेकर भारत से क्यों चला गया ? कहते हैं कि

यहाँ की महंगाई देखकर उसके सिपाहियों के होश उड़ गये। वे भागे-भाग सिकन्दर के पास गये कि हम इन्हें लूटने आये थे, ये तो हमें ही लूटे ले रहे हैं और कुछ दिन रहे तो यहाँ के दुकानदार तो हमें ही कंगाल ही कर देंगे। सिकन्दर भी घबरा गया। इससे पहले कि सैनिक बगावत कर दें यहाँ से भाग जाने में ही समझदारी है। इस तरह समय रहते अपने सैनिकों की जान-माल को बचा ले जाने के कारण ही उसका नाम सिकन्दर महान पड़ गया। बाद में इतिहासकारों ने इसमें पोरस के डायलौग जोड़ के लीपा-पोती कर दी। सच तो ये है कि सिकन्दर को योद्धाओं ने नहीं बल्कि दुकानदारों ने हरा दिया।

आपको तो पता ही है कि आजकल लोग नौन-रेजीडेन्ट इंडियन बनने की चाह में भाग-भाग कर दूसरे देशों में सैटल हो रहे हैं, क्योंकि उनका कहना है कि ये स्कूल वाले ब्राउन साब हमें लूटें इससे तो अच्छा है कि गोरों के हाथों लुटें। बच्चों को अंग्रेज़ों से ही अंग्रेज़ी पढ़वाई जाये। इसमें भी एक 'स्टेटस सिम्बल' होता है। जो आधुनिकता से करते प्यार वो अंग्रेज़ी से कैसे करें इन्कार ? गोरे रंग का ज़माना कभी होगा ना पुराना। वैसे हम लोग इंडियन तो कभी रहे ही नहीं। हम हिन्दू हैं, मुसलमान हैं। राजस्थानी हैं, बंगाली हैं। ब्राह्मण हैं, क्षत्रिय हैं। थोड़े और पढ़ लिख गये तो साउथ इंडियन, नॉर्थ इंडियन हो गए। जब कुछ न बचा और हाथ में पैसे आ गया तो नॉन-रेजीडेन्ट इंडियन हो गये। अब सामान्य इंडियन्स को कौन पूछता है ? टके में सौ मिलते हैं। किसी भी गली, चौराहे, झोंपड़पट्टी और एम्पलायमेंट एक्सचेंज में उपलब्ध हैं।

हम लोग हवा महल और बिनाका गीतमाला सुनकर बड़े हुए हैं। आज की पीढ़ी मोबाइल फोन और इंटरनेट के माध्यम से डिस्को और पब में पल बढ़ रही है। इनके चलते मार्किट में इतने ड्रेस डिज़ाइनर हैं किन्तु कपड़े हैं कि छोटे से छोटे होते जा रहे हैं। डिज़ाइनर लो ड्रेस डिज़ाइन नहीं कर रहे बल्कि नई डिज़ाइन में शरीर को दिखाने का इंतज़ाम कर रहे हैं। जितने ज्यादा ड्रेस डिज़ाइनर, उतने छोटे कपड़े। मुझे तो डर है कि कहीं ये कच्छ बनियान गिरोह वाले पेंट-कमीज़ को 'आउट ऑफ फैशन' ही न करा दें। फिर सोचिये हम लोग कच्छ बनियान में ऑफिस में बैठे कैसे लगेगे ? इसमें एक फायदा है कि जब लोगों की जेबें ही नहीं होंगी तो बस में, रेल में जेबें कटेंगी भी नहीं। गांधी

जी के दोनों सपने साकार हो जायेंगे। पहला कांग्रेस पार्टी को भारत की आज़ादी के बाद समाप्त कर दिया जाये। दूसरे जब तक प्रत्येक भारतीय को तन ढाँकने के लिए पर्याप्त वस्त्र न हो वह लंगोटी पहनेगा। आप सोचेंगे इसमें क्या अंतर है ? अंतर ये है कि पहले आदमी ईमानदार हुआ करते हैं, अब कमीज़ें ईमानदार होती हैं। सोचिये बेईमान बनियान, गुंडा पजामा कैसे लगेगा ?

एक ही यूनिफॉर्म पूरे देश के स्कूलों में लागू करेंगे तो क्या विश्व बैंक प्रतिबंध लगा देगा ? हम जैसे ट्रांसफर वाले लोगों की बहुत बचत होगी नहीं तो पूरा वेतन यूनिफॉर्म, टाई, जूते, मोजे, बैल्ट आदि खरीदने में ही निकल जाता है। उसी तरह फीस, सिलेबस और किताबों में एकरूपता लाई जा सकती है। कस्बे के एक स्कूल में बच्चों से अचानक कम्प्यूटर फीस ली जाने लगी। जानकारी मिली कि एक साफ-सुथरे कमरे में सफेद चादर से ढँके हुए कम्प्यूटर को केवल काँच की खिड़की से ही 'स्टडी' कर सकते हैं। उन्हें समझा दिया गया कि इक्कीसवीं सदी कम्प्यूटर सदी होगी। अतः वे तब कम्प्यूटर को छू सकेंगे। हाँ वे चाहें तो तब तक एम टीवी से दिल बहला सकते हैं। ये भी भवसागर पार करने में मददगार साबित होगा।

वैसे जब से हमारे पास बम आया है हमारी हालत उस बच्चे जैसी हो गयी है जिसे दीवाली पर कुछ अलग से दिखने वाला 'स्ट्रिंग' किस्म का बम मिल गया हो और वह सबको दिखाता फिरे। पीछे हमारा दूध वाला कह रहा था कि जितना पानी मिला दूध पीना है अभी पी लो, बम फूटेगा तो न पानी मिलेगा न दूध। अब नेता और नागरिक सभी बम की बातें करते नज़र आते हैं। हम वास्तव में शुकुगुज़ार हैं कि हमें एक रिप्रेजेंटिंग टॉपिक दिया। नहीं तो बोर हो गये थे वही प्याज़, टमाटर के दाम, बिजली-पानी का रोना, गरीबी, अकाल, क्रिकेट और फुटबॉल की बातें कर-करके। विडम्बना बस यही है कि जो व्यक्ति अहिंसा का सबसे बड़ा हिमायती रहा, क्या वह बम के धमाके से खुश हुआ होगा, अगर नहीं तो बुद्ध क्यों मुस्कराये ? क्या रहस्य है ?

रवीन्द्र कुमार,

मुख्य कार्मिक अधिकारी (औद्योगिक सम्बंध),
मध्य रेल, मुंबई सी एस टी